बुरे शिक्षक और भ्रष्ट प्रबंधक

❑ मूलचंद गौतम

निरंतर परिष्कार से पत्रिका 'विमर्श' का स्वरूप निखर रहा है । उसी अनुपात में अपेक्षायें भी बढ़ना स्वभाविक है । इसी क्रम में कुछ बुरे शिक्षक और भ्रष्ट प्रबंधकों पर भी ध्यान दें, सर्वेक्षण करायें । परिवार में पिता के सामंती आचरण के समान्तर शाला में शिक्षक की दरोगाई भी बच्चों पर कम अत्याचार नहीं करती थी । मां-बाप भी बच्चों को पीटने वाले शिक्षकों को न केवल आदर देते थे, बल्कि साफ तौर पर कहते थे, 'मांस-मांस आपका, हड्डी-हड्डी हमारी', यह भय बहुतों का जीना हराम कर देता था ।

इलाके में मेरे खुद के बाबा की मार के किस्से उनके शिष्य आज तक बड़े गौरव से बयान करते हैं- उनके नरम डंडे की मार (रस्सी से पिटाई) से बने-बिगड़े, स्कूल छोड़ बैठने वालों की बातों से लगता है कि काश उनके पास कोई हथियार भी होता ।

नाभि से पकड़ कर उठा देने व कान की खिंचाई मुझे भी खूब याद है । साथ ही पीटने वाले शिक्षकों के प्रति उभरा मानसिक गुस्सा और बदला लेने की कल्पनाएं जीवंत हो उठती हैं । ठीक यही भावना बिना गलती के पिता से पिटने पर भी होती थी । यह छवि सद्गुरू से तो नहीं मिलती थी । आगे चलकर भी कुछ ऐसे शिक्षक मिले जो कभी सीधे मुंह बात करना गवारा नहीं करते थे। उनके प्रति मन में आज तक कोई आदर नहीं पनपा । और आज तो -

हरई शिष्य धन सोक न हरई ।
सो गुरु घोर नकर मेंइ परईं ॥

किस्म के गुरुओं का बाहुल्य है ।

गुरु सिख अंध बधिर कर लेखा ।
एक न सुनइ एक नहिं देखा ।।

किस्म की धक्कापेल के बीच बुरे प्रबंधकों से भी साबका पड़ रहा है । अच्छा हो 'विमर्श' में कभी 'राग दरबारी' (श्रीलाल शुक्ल का एक विख्यात उपन्यास) का शैक्षिक विवेचन करें -करायें, तो यह पक्ष भी उभरे । सबसे बड़ा उपनिवेश तो यहां है ।

और भाजपा की सरकारों ने तो हद कर दी । सरस्वती शिक्षु मंदिरों के आचार्यों की तरह धोती-लंगोटी मात्र देने की तमन्ना पाले संस्कृति के ये कर्णधार क्या कर रहे हैं, कभी इस पर भी गौर करवायें। शिक्षकों को नये वेतनमान नहीं देने को कृत संकल्प ये कर्णधार उन्हें फिर निजीकरण के कोल्हू में पेल देने को कटिबद्ध हैं। तब क्या होगा, खुदा जाने ! सुदामा के अनेक अवतार देश में दिखाई देंगे - मानविकी के शिक्षकों की दयनीय आर्थिक़ स्थिति-विज्ञान, वाणिज्य, अंग्रेजी के शिक्षकों की अपेक्षा-क्या है, यह कहने की बात नहीं । 'आधी बोरी आलू' ('विमर्श' के चौथे अंक में प्रकाशित ऊषा शर्मा का संस्मरण) अब पूरी बोरी हो गया है । जरूरी है कि 'विमर्श' यह हिस्सा भी शामिल करे और कारगर तरीका सुझाये कि ऐसी स्थिति में क्या हो : क्या शिक्षा की दुकाने ही हमारी स्वाधीनता का लक्ष्य थीं ? ◆